प्रोफेसर डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन, उदयपुर
संक्षिप्त जीवन–वृत्त

म. प्र. के जबलपुर जिले के छोटे से **सिहुंडी** ग्राम में जन्मे प्रोफेसर जिनेन्द्र कुमार जैन ने प्राकृत एवं जैनविद्या के क्षेत्र में अनेक कार्य किए हैं। 1980–1993 के मध्य मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से बी. ए., एम. ए. एवं पी–एच. डी. की उपाधि प्राप्त की तथा 1987 में यूजीसी की नेट/जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण की। जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं मे सहायक आचार्य एवं सह–आचार्य पदों पर कार्य करते–करते लगभग 20 वर्षों तक प्राकृत एवं जैनविद्या का निरन्तर अध्यापन कराया। तत्पश्चात 2012 से मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में आकर जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग में अध्यक्ष एवं आचार्य पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन विभागाध्यक्ष एवं आचार्य पद के साथ–साथ विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के **''एसोसिएट डीन''** पद को भी सुशोभित किया है। **वर्तमान में आप भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी के अध्यक्ष** पद पर आसीन हैं। प्रशासनिक दायित्वों को बखूबी निभाते हुए डॉ. जैन विभिन्न विश्वविद्यालयों की अनेक कमेटियों तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की शोधपरक एवं गोपनीय कार्यों की विभिन्न कमेटियों में भी आपना योगदान दे रहे हैं। यूजीसी के मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट तथा स्वतंत्र रूप से अन्य शोध योजनाएं आपने सम्पादित की हैं। जैनविद्या और प्राकृत पाण्डुलिपियों के सम्पादन में विशेष गति एवं रुचि रहती है।

प्रो जिनेन्द्र कुमार जैन एक विद्या–अध्यवसायी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनके निर्देशन में अभी तक **20 शोध छात्रों ने पी–एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है एवं 10 शोधार्थी छात्र अभी पंजीकृत हैं।** आपने लगभग 65 राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्राकृत भाषा–साहित्य एवं जैनविद्या के विभिन्न सिद्धान्तों पर शोध पत्र तैयार किए हैं, जो जैनविद्या एवं प्राकृत की मानक पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जा चुके हैं। आपकी 16 पुस्तकें प्रकाशित हैं–

1. **तेरापंथ का राजस्थानी को अवदान**
2. **जैन काव्यों का दार्शनिक मूल्याँकन**
3. **आराधना प्रकरण**
4. **शब्दों के मोती**
5. **जैनविद्या एवं बौद्ध अध्ययन के आयाम**
6. **सीप के मोती**
7. **सिरिकुम्मापुत्तचरियं**
8. **जैन परम्परा में सल्लेखना9**
9. **पाइय गज्ज–पज्ज संगहो**
10. **अक्ख़ाणयमणिकोसं**
11. **रत्नकरण्ड श्रावकाचार परिशीलन**
12. **प्राकृत भाषा एवं साहित्य**
13. **अक्खर पाहुड**
14. **आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान**
15. **जैन दर्शन परिभाषा कोश**
16. **प्रमुख प्राकृत भाषाएं एवं प्राकृत साहित्य की विविध विधाएं**

डा. जैन को निम्नांकित सम्मान एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है–

1.**ब्र. पूरणचन्द्र रिद्धिलता लुहाड़िया पुरस्कार, 2003**–श्री दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र, श्रीमहावीरजी द्वारा प्रवर्तित वर्ष 2003 के पुरस्कार से सम्मानित

2. जैन समाज, चैन्नै द्वारा ई. 2000 में सम्मान

3. उपखण्ड अधिकारी लाडनूँ (राज) द्वारा लेखन के क्षेत्र में किये उल्लेखनीय कार्य हेतु 26 जनवरी, 2005 को सम्मानित

4**.** पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के कुशल संचालन पर 11 अक्टूबर, 2005 को उपस्थित समस्त विद्वानों द्वारा सम्मानित।

5. **''विक्रम कालिदास पुरस्कार–2010''** से सम्मानित।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में 17–23 नवम्बर, 2010 को आयोजित कालिदास समारोह–2010 में **''कालिदास के संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतभाषा का वैशिष्ट्य''** विषयक आलेख पुरस्कृत हुआ।

6. दक्षिण भारत जैन सभा, सांगली में 20 नवम्बर, 2011 को आयोजित नैमित्तिक वार्षिक अधिवेशन में **''श्री कुन्दकुन्द प्राकृत ग्रन्थ–संशोधन एवं लेखन पुरस्कार– 2011''** से सम्मानित।

7. ''डॉ. कपूरचन्द्र जैन स्मृति प्रथम पुरस्कार–2018'' से सम्मानित। परम पूज्य आचार्य ज्ञानसागर जी महा. के सान्निध्य में बबीना में दिनांक 30 मई, 2018 को आयोजित **श्री दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद्** के पुरस्कारों में **से सम्मानित।**

डॉ. जैन अनेक संस्थओं के अध्यक्ष, महान्त्री एवं सदस्य के रूप में सामाजिक दायित्वों का भी निर्वहन कर रहें हैं। प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान, लाडनूं तथा भगवान् महावीर दिगम्बर जैन विद्वत् समिति और भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी के अध्यक्ष तथा अ. भा. दिग. जैन शास्त्री परिषद् के उपाध्यक्ष तथा अ. भा. दिग. जैन विद्वत् समिति, अ. भा. प्राच्यविद्या सम्मेलन, पूना के सदस्य के रूप में अपना अकादमिक सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन
9–ए गणेशनगर, पायड़ा
बड़ी पीपली वाली गली,
विश्वविद्यालय मार्ग, उदयपुर–313001
मो. 9214864212
सम्प्रति
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
प्राकृत एवं संस्कृत विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
मान्य विश्वविद्यालय
लाडनूं–राजस्थान
मो.–9214864212